परधान जनजाति की बोली के लोकगीतों का हिंदी अनुवाद : समस्या और समाधान

प्रस्तुतकर्ता
विशाल आनंदराव सयाम
एम.फिल. (2016/04/219/013)
अनुवाद अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा – 442 005. महाराष्ट्र (भारत)
Email.id- sayamvishal@gmail.com
Mob. 919673180072

शोध सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में आदिवासियों का निवास रहा है। सातपुडा पर्वत श्रृखंला के दोनों और तथा मैकल पहाड़ियों के चारों और भी व्यापक रूप से आदिवासी रहते है। इनमें विशेष रूप से गोंड, कोरकू, कोलाम, पारधी, मोगीया, परधान, बैंगा आदि उल्लेखनीय हैं। बस्तर प्रदेश की कुछ महत्त्वपूर्ण जातियों में मुरिया, पहाड़ी मुरिया तथा इंद्रावती घाटी के सींग लगाने वाले माड़िया जनजातियाँ हैं।

जनजातियों की जीवन सहज और यथार्थ चित्रण लोकगीतों और लोकनृत्यों के माध्यम से प्राप्त होता है। लोकगीत ऐसा दर्पण है, जिसमें व्यक्ति समाज यहां तक संपूर्ण राष्ट्र अपना प्रतिबिंब देख सकता है, अत: लोकगीतों का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। जनजातियाँ समाज में लोकगीत की परंपरा प्राचीन काल से ही प्रचलित रही है। जिसके द्वारा जनजातीय जीवन के व्याप्त आचार-विचारों का ज्ञान स्पष्ट होता है, लोकगीत जनजातियों के सभी पक्ष से जुड़ा हुआ है। दशहरा, दीपावली, होली जैसे पर्वों पर यहाँ की जनजातियाँ रेला, गौरी गौरा, फाग, तीजा, कमरछट जैसे पर्वों पर कथागीत के माध्यम से अपनी परंपराओं और लोक रीतियों का परिचय कराती है। वहां फसल कटने के बाद पूस, पूर्णिमा, के माध्यम से सामाजिक धार्मिक मान्यताओं को बनाये रखने का प्रयास भी प्रत्येक नये फसल के प्राप्ति के बाद भी उत्सव मनाने की परंपरा पाई जाती है, यह सभी अवसर परधान जनजाति समुदाय में करते हैं। परधान जनजातियों का अपने अराध्य देवी-देवताओं के प्रति गहन आस्था और विश्वास होता है। इसी कारण समय-समय पर उन्हें प्रसन्न करने के लिए उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए देवी-देवताओं से संबंधित लोकगीत के माध्यम से पूजा अर्चना की जाती हैं।

संस्कृति के बिना समाज नहीं होता हैं। क्योंकि संस्कृति और समाज एक दूसरे के पूरक है। समाज से ही संस्कृति का जन्म होता हैं। हिंदुओं की जैसी संस्कृति है, वैसे ही परधान जनजाति के लोगों की भी अपनी संस्कृति है। भारत में रहने वाले सभी आदिवासियों की संस्कृति मिलती-जुलती हैं। लेकिन हिंदू और मुस्लिम की तुलना में इनकी संस्कृति बिल्कुल अलग हैं। इनके कुछ त्योहार भी भिन्न रहते है। हिंदू के संपर्क में आने से हिंदू के कुछ त्यौहार मनाने लगे हैं। इनका मुख्य त्योहार होली का त्यौहार इस त्योहार में सभी लोग उपस्थित रहते है। इस त्योहार को बड़े धूम-धाम से मनाते है। ऐसे त्योहारों पर गाए जाने वाले गीतों को अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा में लाने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य के माध्यम से इनकी संस्कृति, विशेषताएँ, त्योहार और त्योहारों पर गाए जाने वाले लोकगीतों का अनुवाद तथा विश्लेषण के माध्यम से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

इस लघु शोध कार्य का उद्देश्य यह है कि परधान जनजाति के लोगों की संस्कृति और त्यौहारों पर गाए जाने वाले गीतों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। परधान जनजाति के लोकगीतों को हिंदी भाषा में अनुवाद करके इसे देवनागरी लिपि में लिपिबद्ध करने हिंदी भाषाओं में लाने का प्रयास किया गया है। इनकी विशेषताओं को अवगत कराना और उनके लोकगीतों का अनुवाद और विश्लेषण के माध्यम से अन्य समाज के लोगों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

Hindi Translation of Folk Songs of Pardhan Tribes : Problems and Solutions

Research Scholar

Vishal Anandrao Sayam

M. Phil. (2016/04/219/013)

Department of Translation Studies

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

Wardha-442 005 Maharashtra (India)

Email.id- sayamvishal@gmail.com

MOB+919673180072

Research summery

India has been residence of Tribal from the ancient period. In two ranges of Satpuda Hill and four ranges of Maikal Hill many tribal live. Among them Gond, Korku, Kolam, Pardhi, Mogiya, Pardhan and Baiga are remarkable. In the few important castes of Baster region mariya, pahadi Muriya and Indrawati Ghati's horn wearing castes are living.

Folksongs and folkdances depict true picture of life of various castes. Folksong is like a mirror where a person, society or country can see reflection, hence folksongs are important in human life. The tradition of folksong in various castes is ancient. It shows life and thinking of castes. Folksong is connected with all castes of all parties. Various castes of country introduces tradition and culture on the festivals like Dashera, Dipawali, Holi as well as Rela,Gawri-Gawara, Fag, Tija, Kamarchat. Aftar crop of grain poos – Purnima which shows social and religious approval, Pardhan Community celebrates festival after getting every new grain Pardhan caste has deep faith on their Gods – Godesses hence they worship these Gods – Godesses by related folksong to make them happy.

There is no society without culture. Because culture and society are complement to each other. Culture is born from society. Culture of pardhan tribes are just like Hindu culture. All Tribals culture is similar. But diferent from the culture of Hindu and Muslim. A some festivals are also different. Due to the exposure of Hindus, they started celebrating the festivals of Hindu. The main festival of Pardhan Tribes is 'Holi Festival' All people are present in this festival celebration. This festival is celebrated by singing a song. Song are sing for to forget fatigue and suffering ailments. This singing is towards to Gods delights the suffering, obstacles and setbacks and happiness and peace. Their culture and festival sing through the songs translated into another language is to bring. This research mark through their culture, their characteristics, their festivals and festivals songs will be used to convey through translation and analysis has been attempted. There culture and emotions. The aim of research is to bring. The facts of this tribes before society. We have to preserve the information of tribals of Anicent India.